Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथवर्षजातकं॥ प्रश्नाहकालोत्पन्नस्फुटंनत्संवीक्ष्यसर्व
रवत्सरायधास्यः तथानिवेश्यग्रथमत्रयःस्याद्भावोवला
दल्पविलग्नमत्र॥१॥ तनोःसकाशाद्यत्तमेगृहेवावाच्यस्य
निरूक्तस्यसकाशंतोवा॥ यत्तानिवर्षाणि तत्तोऽरिष्टमस्य
कासतोमासदिनानिपश्चा॥२॥ सचंद्रसूर्य्यस्यलवाद्विनि

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भावर्षगतिंद्वादशभाजिताः सुः॥ मासास्तरग्वासुगतार्दनि
घ्नाः खरामभक्तास्तिथिरत्रशेषम्॥३॥ लब्धंद्विभक्तंखलु
शेषपक्षोनतत्रवारस्तरग्वनाडी॥ सूर्येन्दुलिप्तायुति
र्वर्षनिघ्नीवेदोद्धृतास्ताधरिकाभवंति॥४॥ततोत्रचंद्रेहि
नरश्मिभागाः गतार्दनिघ्नागगनेचभक्ताशेषेचशुक्लरामः॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

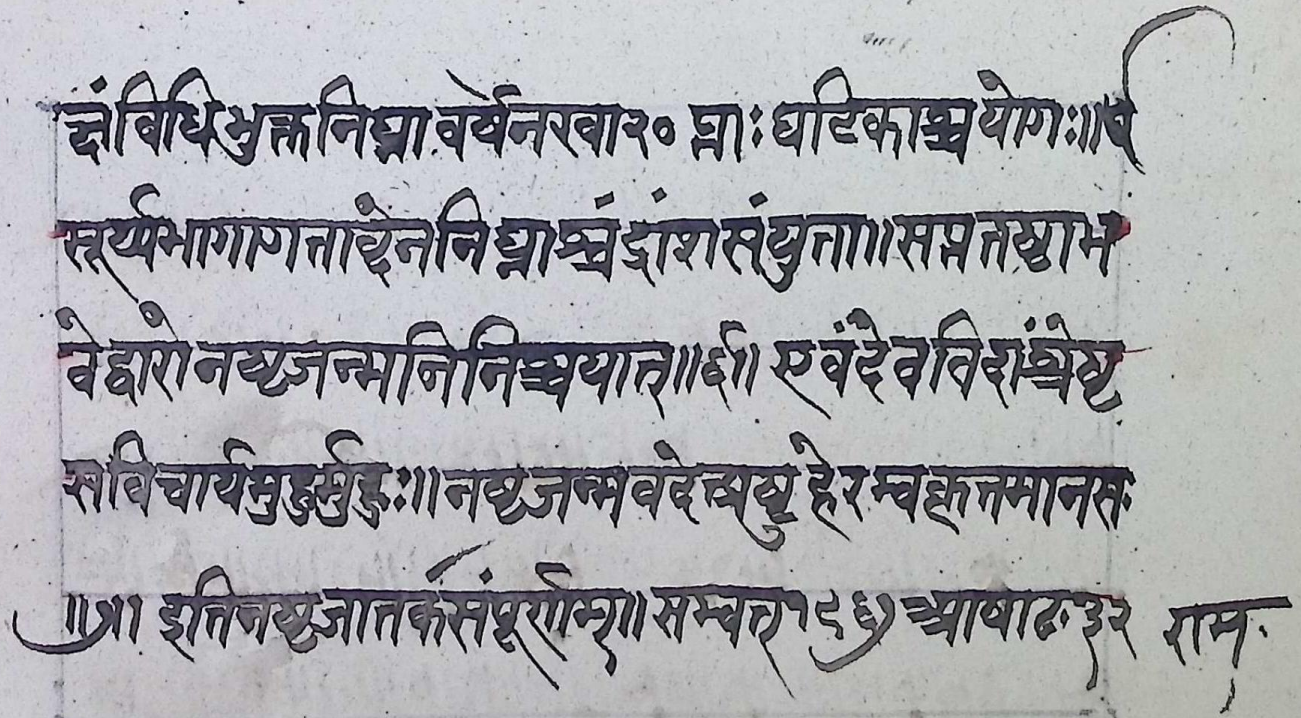

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न.प्र. ३

अथ भाषार्थः॥ स्पष्टोक्तात्कालीनग्रहमे उस ग्रहका परमनीचराश्यादि
हीनकरे यदि छेदसे अधिक बचतो वारा हुमे शोधनकरे तदनु

अथ रश्मिकरणविधिः॥ यदोच्चनीचौभ्यधिकेयद्दकोच्च
ओच्चतोसंमहतोविभक्तस्य तत्कैर्लब्धराश्यादिकमर्पयेल
ब्धं सूर्यादिकानांमिहरश्मिजञ्चः॥१॥ अथान्वयः निच
यद्स्पष्टोन यद्दका अधिकश्चेच्चोच्चसमहृततत्कै
विभक्तस्य लब्धः राश्यादिकः पितृत्वब्धं सूर्य्यादिकाना

नन्तर शोधकोसात्तसेगुणाकरे जोगुणन फल राश्यादिमिले वह: ग्रहका
भागादपजो लब्धिमिले वह राश्यादि सूर्य्यादिकोंकि रश्मिजानना
यथोक्तात्कालीन स्पष्ट सूर्य ०।८।५५।१० सूर्यपरनीच ६।१०।०।०

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोसातसँ७ गुरादिया तव ४१।२२।१५।१० इनाइसमे ६ का भागदियातो
तत्थसाध्यादि ६।२८।२ सूर्यक्रिशमिइ इसअंकार =प्रत्यग्रघोकि
जानना ७

इहराशिमउक्ता॥१॥ =अथरश्मिसत्कारमाह॥ स्वोच्चस्थित
द्विगुणांनिरुक्ताः स्वेद्वादशेमित्रगृहेस्वराशौ॥ नृपांश
कोनाः६ कथिताश्चनीचे शत्रोः पुनश्चेदिदशांशकेच वक्रीपुनस्तद्विगुणादद्याति तत्यागकालेऽष्टम
भागहीनः॥२॥ =अथान्वयः॥ स्वोच्चस्थितस्वग्रहस्य
=अथभाषा =अर्थः॥ स्वोच्च =अपने उच्चराशिमेंस्थितहुं
=अपने द्वादशवामेंहोमित्रके घरमेंहो =अपनीराशिमेंहोतोउ

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

ॐ

न. अ. ४

दीनकदेय० शुक्र धूनिर्क्षे विनाशो यह=स्वस्तं गतहो न हरद्विमीह
नजानना रश्मिधनी चत्रनाभ मे घवेत्तो पूर्वरश्मिन्धो। द्वियाणि

पूर्वानीतं रश्मी द्वियुगां निरुक्तां: स्वद्वादशमित्रगृह
स्वाशौ द्वियुगितांनिरुक्तं नुपुनः निचेशत्रो हतदारु
र्वानितं रश्मिजं न्यांशकोऽना कथिता पुनः चेच
द्विदशांश केच. शद्यात न्यांशा६कोनाकथिता पुनः
वक्रीरंभे तत्रश्मि पूर्वानितिं द्वियुगां दशागि तत्वक्रीवक्र शमः॥ ४
तत्रे वक्रीके =ग्रतमे रश्मिधतिद्वावेतौ =प्रथम भाग हीन
कदनेन द्वयश्च रश्मिजानना॥ इतिरश्मिध्वदशाम्॥ अधिकार.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्याग काले चयभागहीनददाति॥ २॥ इतिशमिसंस्कार.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

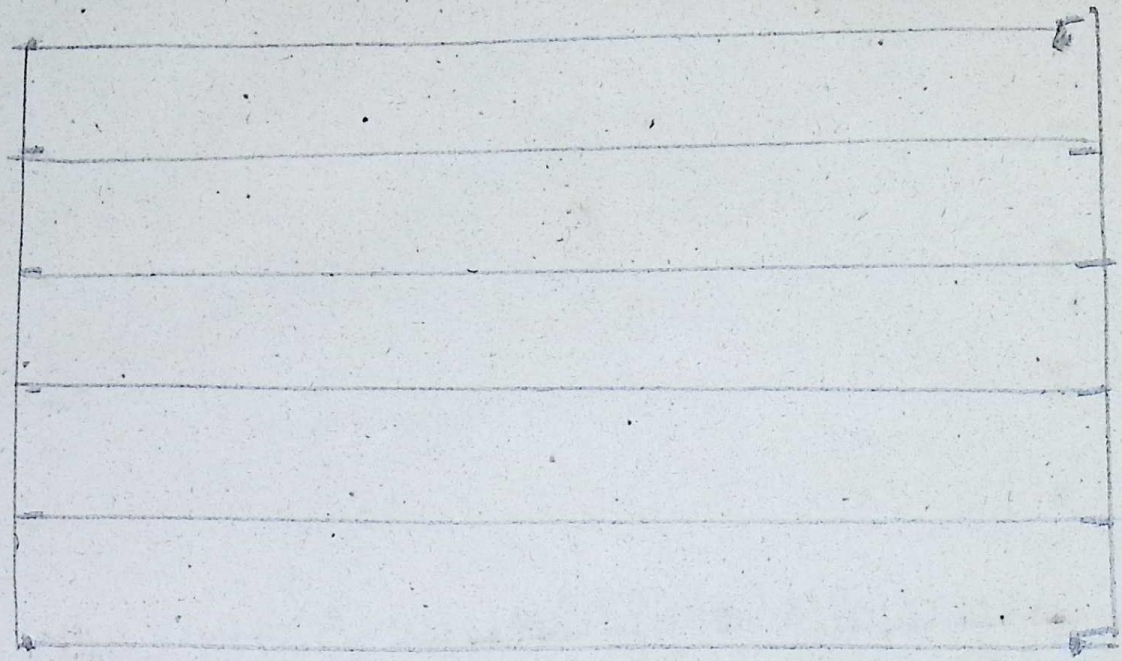

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ ॥ अथ सर्वसारनक्षत्रपुस्तकालिख्यते ॥ ॥

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ पसाव बंधवो लगावा हड़
बड़ गोरवच अमलतास पावा
णभर० विलकिजड़ जवासा कु-
लथी पीत्ति कपड़ छाणा कर्क सु-
सहत मिलाव सब चीजू छे २ मासे
औषधी दरड़ कूकी पावे डुडसेर पा-
णी पावे कड़ावे फरज़ व थोड़ासा
पाणी रहे तब पीवे बंधकुलेजदारे
वद होवे अथवा ताजा डुधगऊका
उसमे गुड मीलावे फेरपीवे जदाई वद
होवे॥२॥ संवत १९६७ आषाढ शु० ३

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ प्रसाव बंधको लगोटको हरड़
बड़ी गोखरू अमलतास पावा
णभर० बिल्वकिजड़ जवासाकु
लथीपीस्के कपड़ छाणाकर्के सु
सहत मिलाव सब चीजू छे २ मासे
औषधीदरड़ कूकेपावे डुडसेर पा
णीपावे कड़ावे फरज़व थोड़ासा
पानीरहतवपीवे बंधखुलेजदरि
वदहोवे अथवा ताजोडुधगऊका
उसमेगुडमीलावेफेरपीवेजदाईवद
होवे॥२॥ संवत १९७ आषाढ़ शु० ३२

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ ज्वरान्तकारण ज्वरको
२ खट्टाई रोगको दवा धातु शोधन सुमेदरंगको
३ सर्वज्वरोभयरसाके दवा बहुत जमदा
४ रक्त शोधन दवा बहुत जमदा
५ पांडु रोगको दवा बहुत जमदा
६ वंद बोलने दवा बहुत जमदा
७ खांसीको दवा बहुत जमदा
८ गीलटुको दवा बहुत जमदा
९ दमेको दवा बहुत जमदा
१० क्षुद्रोधि दवा बहुत जमदा
११ अकड़ वाईको दवा जमदा
१२ धातुको दवा बहुत जमदा
१३ ज्ञानमोधि दवा बहुत जमदा

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गणितप्रकारः लिख्यते ॥ अथ अथ अथ अथ अथ अथ

३३०×१२×४१ = १२१७६०
१५०×१२×४१ = ५५८००
३०×१२×२२×४१ = २४६८०×४१ = ९८५२०

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री

बन्धुको मासुद्यानं कुर्यात् को नास्ति याचितः को मुदा
नित्यं न कुरुते येन पण्डितः ॥१॥

अथ दोषजीर्णे पिरं कुर्यात् तदोवा ग्र
स्नौ कोष्ठतस्य चौषधा तैप्रथ
ईरसवैरागंतुजो पोच्च ॥१॥ ॥

अबोधनिमिरुथन चक्षुषोमि
षजेरुतेस्य समंकरोत्यग्निवै
स्यघ्यमंजनमाख्यायादोज्ञी
णिज्वरंकुर्य्यात्।

CC0. In Public Domain Prof. Diwakar Dutta Sharma Delhi Collection